[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3614

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मधुवनी चित्रकला में रंगों का समावेष

कंचन कुमारी
डी0ई0आई, कला संकाय

भारत एक प्राचीन सांस्कृतिक देश है। यहाँ की कला एवं संस्कृति में लोककला का अनूठा समन्वय दिखाई देता है। अनेक विद्वानों ने समय–समय पर लोककला के महत्त्व को बताया है। लोककलाऐं हमारे देश में लोक परम्पराओं संस्कृति का दर्पण है। जो विभिन्न रीति रिवाज उत्सव में देखे जा सकते है। भारत जैसें देश में विभिन्न प्रान्तों में विविध रूपों में लोककला देखी जा सकती है। जो विभिन्न नामों से जानी जाती है। जो विश्वभर में ख्याति प्राप्त है–मधुवनी की लोक चित्रकला उन्हीं में से एक है। मधुवनी का नाम शायद इसलिए हुआ क्योंकि इस नाम का अपना एक महत्व है। जो यहा की लोक चित्रों में मधु जैसी मिठास है। दर्शक बरबस इस ओर मोहित हो जाते है।

रंगों का इस्तेमाल बहुत खूबसूरती से करना एक कलाकार बखूबी जानता है। पेण्टिंग एक ऐसी कला है जो जितनी मुश्किल है उतनी आकर्षक भी। मधुवनी चित्रकला मिथलांचल क्षेत्र जैसें बिहार के दरभंगा, मधुवनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला हैं। प्रारम्भ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे–धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दिवारों व कागज पर उतर गई हैं।मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरूषों ने भी अपना लिया है।ऐसा माना जाता है कि मिथिला प्रदेश में लोक चित्रकला की शुरूआत वैदिक काल में हुई थी जब राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के अवसर पर कलाकारों से स्वास्तिक अर्पण तथा कुछ अन्य लोकचित्रों को भूमि पर बनवाया था। पहले तो सिर्फ ऊंची जाति जैसें ब्राहमणों की महिलाओं को ही इस कला को बनाने की इजाजत थी लेकिन वक्त के साथ ये सीमाऐं भी खत्म हो गई। आज मिथिलांचल की कला कई गावों की मिटट्ी से लीपी गई झोपडियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़ें या पेपर के कैनवास पर खूब बनाया जाता है। बाद में सांस्कृतिक व धार्मिक अवसर पर बनाए जाने थे। न्यूयार्क रॉयल अण्टारिओं म्यूजियम की प्रतिनिधि कांसस मैथ्यूज् की मानें तो लोकचित्र कलाओं में मधुवनी पेण्टिंग का स्थान सर्वोपरि है।समय के साथ–साथ चित्रकार कि इस विधा में पासवान जाति के समुदाय के लोगों द्वारा राजा शैलेश के जीवन वृतान्त का चित्रण भी किया जाने लगा। इस समुदाय के लोग शैलश को अपने कुल देवता के रूप में पूजते भी है। हिन्दू देवी–देवताओं की तस्वीर, प्राकृतिक नजारे जैसें–सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड–पौधों जैसें–तुलसी और विवाह के दृश्य देखनें को मिलेंगें। मधुबनी पेण्टिंग दो तरह की मानी गई है–भित्ती चित्र और अरिपन या अल्पना।मधुवनी चित्रकारी की विशेषता जो लोकप्रिय रही है, चित्रों में चटकीले और मटियाले रंगों का इस्तेमाल खूब कियाजाता है जैसें गहरा लाल, हरा, नीला, काला। कुछ हल्के रंगों में भी चित्र में निखार लाया जाता है–जैसें–पीला, गुलाबी, और नीबू रंग, बैगनी।

यह जानकर हैरानी होगी कि इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है जैसें हल्दी, केले के पत्ते, लाल रंग के लिए पीपल की छाल का प्रयोग किया जाता है काला रंग काजल और गोबर के मिश्रण से तैयार किया जाता हैं, पीला रंग हल्दी अथवा पराग व नीबू और बरगद की पत्तियों के दूध से, लाल रंग कुसुम के फूल के रस अथवा चन्दन की लकड़ी से, हरा रंग कठबैल(वुडसैल) वृक्ष की पत्तियों से, सफेद रंग चावल के चूर्ण से, सन्दरी रंग पलाष के फूलों से तैयार किया जाता है।रंगों का प्रयोग सपाट रूप से किया जाता है जिन्हें न तो रंगत (शेड) दी जाती है न ही कोई स्थान खाली छोड़ा जाता हैं।भित्ती चित्रों के अलावा अल्पना (अरिपन) का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाजे के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो लेकिन आजकल इसे घर में शुभ कामों में बनाया जाता है चित्र बनाने के लिए माचिस की तीली व बॉस की कलम को प्रयोग में लिया जाता है रंग की पकड़ बनाने के लिए बबूल के वृक्ष की गोंद को मिलाया जाता है। समय के साथ मधुवनी चित्र को बनाने के पीछे के मायने भी बदल चुके है, लेकिन कला अपने आप में इतना कुछ समेटे हुए है कि यह आज भी कला के क्षेत्र में अनूठी छाप छोड़े हुए है।चित्रण से पूर्व हस्त निर्मित कागज को तैयार करने के लिए कागज पर गाय के गोबर का घोल बनाकर तथा इसमें बबूल का गोंद डाला जाता है। सूती कपड़ें से गोबर के घोल को कागज पर लगाया जाता है और धूप में सुखाने के लिए रख दिया जाता है।

मधुवनी भित्ती चित्र में षिल्पकारों द्वारा तैयार किए गए खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता है यह कार्य ताजी पुताई की गई अथवा कच्चीमिटट्ी (चिकनी) पर किया जाता है। गाय के गोबर के मिश्रण में बबूल की गोंद मिलाकर दीवारों पर लिपाई की जाती है, गाय के गोबर में एक खास तरह का रसायन पदार्थ होने के कारण दीवार पर विशेष चमक आ जाती है इसे घर की तीन खास जगहों पर ही बनाने की परम्परा है जैसें– पूजास्थान, कोहबर कक्ष(विवाहितों के कमरे में) और शादी या किसी खास उत्सव पर घर की बाहरी दिवारों पर। मधुवनी पेण्टिंग चित्रों में जिन देवी–देवताओं काचित्रण किया है वे मॉ दुर्गा, काली,

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सरस्वती, राधा–कृष्ण, राम–सीता, षिव–पार्वती, गौरी–गणेश व विष्णु के दश अवतार इत्यादि। पशु–पक्षियों, वृक्ष, फूल–पत्तियों आदि को स्वास्तिक की निशानी के साथ सजाया सवांरा जाता है।
मधुवनी पंण्टिंग लगभग 100 साल से भी पुरानी मानी गई है। ऐसा भी माना जाता है कि पेण्टिंग बनाने के लिए हेण्डमेड पेपर में चार बार गाोबर का घोल लगाया जाता है और फिर उसे धूप में सुखाया जाता है। जब पेपर तैयार हो जाता है। उसके बाद इसमें पेसिंल से डिजाइन ड्रॉ की जाती है डिजाइन तैयार होने पर काले रंग के मार्कर से पुरानी डिजाइन की आउट लाइन की जाती है और फिर आखिरी में रंग करे जाते है। इस पेण्टिंग में बारिख लाइन का सबसे ज्यादा महत्त्व होता है एक पेण्टिंग कम से कम पांच दिनों में तैयार होती है इस पेण्टिंग में ज्यादातर भगवान राम, जगन्नाथ, कृष्ण के साथ गांव का दृश्य नजर आता है।

मधुवनी से सात किलो मीटर दूर जितवारपुर गांव की 75 वर्षीय सीता देवी की बनाई पेण्टिंग की प्रदर्शनी दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जापान के अलावा कई स्थानों पर लगाई जा चुकी है। वर्ष 1976 में इन्हें राष्ट्रीय पुरूस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। रांटी गांव की शान्ति देवी, सुन्दरी देवी तथा शशिकला देवी मधुवनी कला के क्षेत्र में प्रमुख कलाकारों में जानी जाती है व शान्ति देवी को 1986 में राष्ट्रीय पुरूस्कार से नवाजा जा चुका है।1970 में मधुवनी पेण्टिंग को आफिशियल पहचान तब मिली जब भारत के राष्ट्रपति ने मधुवनी के निकट जितवारपुर के जगदम्बा देवी को राष्ट्रीय पुरूस्कार दिया। इस तरह जगदम्बा देवी मधुवनी चित्रकला के क्षेत्र में नेशनल अवार्ड पाने वाली प्रथम महिला बन गई। बाद के मधुवनी कलाकार भी इनके पद चिन्हों पर ही चले लेकिन कोई भी इनकी बराबरी नहीं कर पाया। मिथिला पेण्टिंग में कलमकारी के लिए उन्हें स्टेट अवार्ड मिला। उनकी पेण्टिंग 'एटरनल म्यूजिक' को सन् 2000 का मिलेनियम आर्ट प्रतियोगिता में सर्वोच्च पुरूस्कार मिला। उन्हें विशिष्ट बिहारी सम्मान से सम्मानित किया गया। श्रीमती महासुन्दरी देवी को 2011 में पद्मश्री से नवाजा गया। धीरे–धीरे कार्ड भी मिलते है। दिवारों ,कागज, कपड़ों के सजाने के साथ इंसानों को भी सजाने लगी।

साड़ी का किनारा और पल्लू मधुवनी चित्रकला से चित्रित होने लगा। सबसे पहले सिल्क साड़ी पर मधुवनी ने दस्तक दिया। फिर तो यह सिलसिला चलता ही रहा। यह सब कुछ आज भी महिलाऐं हाथ से बनाती आ रही है।

यह केवल व्यवसाय नहीं बल्कि भारत के एक प्रदेश बिहार के एक जिले मधुवनी की संस्कृति और धरोहर भी है।देश–विदेशों के अनेक स्थानों से लोग स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए इन चित्रों को बेहद कम मूल्य पर खरीदकर इसे ऊंचे दामों पर बेच देते है और आधारभूत सुविधाओं के अभाव में चित्रकार यह सब सहने को मजबूर है। मिथिला ने युग युगांन्तर से नारी षक्ति का प्रतीक रही यह चित्रकला आज औद्योगिकरण के कारण विलुप्त होने के कगार पर पहुॅच गई पर क्षेत्र की महिलाऐं आज भी इसे कायम रखने के लिए प्रयासरत है।

मधुवनी चित्रकला की आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धूम हो गयी बिहार के एक छोटे से राज्य से निकलकर विश्व में अनेक राष्ट्रों में भारतीय परचम को लयराया और आज अन्तर्राष्ट्रीय कला बाजार में अपनी पैंठ बना लिया है और इसका भविष्य उज्जवल है, आने वाले समय में कलाकारों को इस व्यवसायिक दौर में रोजगार के अवसर प्राप्त है और प्राप्त होते रहेंगें। व्यावसायिक दृष्टिकोण से अनेक कला दीर्घाओं में यहां के चित्रों के विविध रूपों को देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1 *आनन्द,मुल्कराज – मधुवनी पेण्टिंग, 1984*
2 *2.ठाकुर,उपेन्द्र–मधुवनी पेण्टिंग, 1908*
3 *अमन,अवधेश–मिथिला की लोक चित्रकलासफलताऐं–असफलताऐं*
4 *www.wikipidia.org.com*